गीत मेरे होंठों पर-8

“दोनों सहेलियाँ पूरी नंगी थी, एक नीचे लेटी थी और दूसरी उसके ऊपर चढ़ी थी. दोनों ने डिल्डो एक साथ चूत में ले रखा था. आधा एक आधा दूसरी की चूत में घुसा था. ...”

Story By: Sandeep Sahu (ssahu9056)
Posted: Thursday, December 19th, 2019
Categories: लेस्बीयन सेक्स स्टोरीज
Online version: गीत मेरे होंठों पर-8

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

गीत मेरे होंठों पर-8

 यह कहानी सुनें

आपने अब तक की मेरी इस सेक्स कहानी में पढ़ा था कि मैं परमीत की दीदी के साथ उनके बिस्तर पर एक ही चादर में लेटे हुए थे.

> दीदी की सेक्स करने के सवाल पर मैंने उनको बताया कि हां.
>
> उन्होंने ये आश्चर्य से पूछा … किससे और कब ?
> मैंने कहा- कल रात केले से…
>
> इस बात पर हम दोनों हंस पड़े. दीदी ने हंसते हुए मुझे चूमा और कहा- चल आज तुझे मैं सेक्स का मजा कराती हूँ.
>
> उनकी बातों के जवाब में मेरा चेहरा भाव शून्य था, एक हिसाब से ये मेरी मौन स्वीकृति ही थी.

अब आगे..

दीदी की बात पर मेरी मौन स्वीकृति क्यों ना होती. आखिर पार्टी के दिन से लगातार कामुकता का माहौल जो बन रहा था. सच कहो, तो दीदी ने मेरे ही दिल में छिपी कामना को हवा दे दी थी.

मेरी तरफ से हरी झंडी मिलते ही दीदी के हाथों की हरकत मेरे पहले से तपते बदन पर एक

नियमित गति से तेज होने लगी और उन्होंने मेरा हाथ पकड़ कर अपनी कोमल कंचन काया पर रख दिया. अब तो उत्तेजना का बढ़ना स्वाभाविक ही था. हम कभी एक दूसरे के स्तनों को सहलाते, तो कभी पीठ पर हाथ फेरते कभी नितम्बों को भींच लेते. इसके साथ ही चुंबनों की झड़ी सी लग गई थी. कभी माथे पर, कभी गले, कभी कंधे, गालों, लबों पर … हम एक दूसरे को चुंबन करने लगे थे.

दीदी अनुभवी थीं … इसलिए लीड रोल में थीं और मैं बस उन्हें फॉलो कर रही थी.

दीदी ने जो कपड़े पहने थे, वो हमारी हरकतों से खुद ही बिखर गए थे. मैंने तो स्कर्ट पहना था, तो दीदी को आसानी से स्कर्ट उठाकर टांगें सहलाते बन रहा था. फिर भी अब हालत ऐसी थी कि एक भी कपड़े का तन पर रहना किसी बड़ी बाधा जैसा था. शायद इसीलिए दीदी ने बिस्तर पर बैठ कर पेंटी के अलावा अपने सारे कपड़े निकाल फेंके.

उन्होंने मुझे भी कपड़े निकालने को कहा, तो मैंने भी आज्ञाकारी बालिका की भांति बात मान कर ऊपरी कपड़े निकाल दिए.

हम दोनों बिस्तर पर वापस लेट कर एक दूसरे से चिपक गए.

अब तक मैंने भी शर्म हया त्याग दिया था. मैंने दीदी के गदराये बदन को जमकर सहलाते हुए दीदी के भारी उरोजों को थाम लिया और उसे पूरी ताकत से मसलने लगी. दीदी के मुँह से चीख निकल गई, पर मैंने कोई रहम नहीं किया. मैंने एक हाथ से उनके एक निप्पल को उमेठने लगी और दूसरे निप्पल को मुँह में भर लिया.

मेरी इस हरकत से दीदी सातवें आसमान में पहुँच गईं और कामुक दीदी के कोमल लेकिन खूबसूरत बदन का भोग पाकर मैं भी बावरी होने लगी.

दीदी के उरोजों में थिरकन शरीर में कंपन और स्वर में लबरेज मादकता को मैं स्पष्ट महसूस

कर रही थी. दीदी का हाथ मेरे पूरे बदन को सहलाते हुए अब खींचने और नोंचने भी लगा था. मुझे दर्द मिश्रित आनन्द ने पागल सा बना दिया.

मैंने दीदी की पैंटी में हाथ डाल दिया, उनकी चूत तो कामरस का तालाब बन चुकी थी. मैंने उस कामरस के भंडार को कैदमुक्त करना चाहा और दीदी ने अपने नितम्ब उठाकर पेंटी बाहर करने में मेरी पूर्ण सहायता की.

कामरस के तालाब का पानी आसपास की झाड़ियों को भी भिगा चुका था. दीदी की चूत पर घने बालों से मुझे कोई आश्चर्य नहीं हुआ, क्योंकि परमीत ने पहले ही बता रखा था कि हम सरदारियां शरीर के किसी भी हिस्से के बाल साफ नहीं करतीं. इसलिए दीदी के अंडरआर्म पर भी घने बाल थे.

दीदी ने भी मेरी चूत को आजाद करने में देर नहीं लगाई और मैंने भी उनका बखूबी साथ दिया. दीदी की चूत तालाब थी, तो मेरी चूत तलईया बन गई थी.

मेरी चूत पर बहुत छोटे रोंये थे … अर्थात चिकनी चूत कहा जाए, तो चल जाएगा. उनके अनुभव … और किसी गैर के पहले स्पर्श ने मुझमें सिहरन पैदा कर दी थी.

मेरे मुँह से ‘आहहह … उहहह …’ की कंपित करने जैसी सीत्कार निकल पड़ी. मेरी आंखें तो मुंद ही गई थीं, बस सारी चीजें छूकर लिपटकर ही हो रही थीं.

कामुकता के मुक्त गगन पर दो आजाद पंछी प्रेमक्रीड़ा में मग्न थे.

अब दीदी ने मेरे मुँह से अपना मुँह लगा दिया और लंबी गहरा चुंबन करने लगीं. मैंने भी उनका पूरा साथ दिया. उन्होंने इसी अवस्था में रहकर मेरी चूत में दो उंगलियां घुसेड़ दीं और मेरी जीभ को चूसने लगीं. उनके दोहरे हमले से मैं तड़प उठी. दोनों ही चीजें कामुकता के चरमोत्कर्ष पर पहुंचाने वाली थीं.

ऐसे भी मेरा पहला सेक्स था, इसलिए बदन अकड़ने लगा … होश खोने लगा. मैंने दीदी की जीभ अपने मुँह में खींच लिया और उसे काट लिया … क्योंकि मेरा शरीर कामरस त्याग रहा था और अमृत मंथन का अजीब सुख अपनी मंजिल पा रहा था.

दीदी के अनुभव ने मेरी हालत को भाँप कर उंगलियों की हरकत और भी बेहतरीन अंदाज में तेज कर दीं. अब वो मेरी चूत के दाने को सहलाते हुए उंगलियां अन्दर बाहर कर रही थीं.

मेरी अकड़न तेज होते देख कर दीदी झटपट उठ बैठीं … और नीचे जाकर मेरे दोनों पैरों को मोड़ कर मेरे सर की ओर उठा दिया, जिससे मेरी चूत उनके सम्मुख और स्पष्ट बाधा रहित पहुंच गई. बस दीदी ने अपना मुँह मेरी चूत में लगा दिया. उनके मुँह लगने से मेरी चुत को मानो जन्नत का अहसास होने लगा था. वो मेरी चूत को चाट नहीं रही थी, बल्कि उसे खाने का प्रयत्न करने में लगी थीं.

मेरे लिए ये भी नया अनुभव था. मैं ज्यादा देर ना टिक सकी और मैंने दीदी के मुँह में ही अपना अमृत त्याग दिया. दीदी ने किसी स्वादिष्ट पेय पदार्थ की भाँति मेरी चुत के रस को ग्रहण कर लिया.

मैं तो अब भी आनन्द के भंवर में ही गोते लगा रही थी. मुझे लगा कि अब दीदी वहां से हट जाएंगी और साथ आकर लेटे जाएंगी, पर ऐसा नहीं हुआ. उन्होंने चूत को पूरा चाटा और फिर से मुझे गर्म करने लगीं.

मेरी उफनती नई-नई जवानी थी, मैं हार कैसे मानती. मेरी कंचन काया अब शरबती बदन हो चुका था, इसलिए मैं स्वाभाविक रूप से कुछ ही पलों में फिर से गर्म हो गई. इस दौरान कुछ देर मन में सुस्ती आई थी, पर मैंने दीदी का साथ नहीं छोड़ा और अब तो मैं भी पूरे शबाब पर थी.

दीदी मेरी चूत चाटने में व्यस्त थीं, तो मैं अपने ही मम्मों को मींजने लगी, साथ ही मैं दीदी के बालों को भी खींचने लगी.

दीदी ने अब कुछ पलों का ब्रेक लिया और अपनी अल्मारी की तरफ चली गईं, वो अल्मारी से कुछ निकालने लगीं. सेक्स के बीच ऐसी रूकावट मन को बेचैन कर देती है, मैं भी दीदी को जल्दी आने के लिए कह रही थी.

दीदी जब आईं, तो मेरी चूत और तड़प उठी, लेकिन मन घबरा गया. दीदी के हाथों में एक मोटा सा डिल्डो था.
मेरे मुँह से अचानक निकल आया- आहहह हाययय दीदी मजा आ जाएगा.
दीदी ने आंख दबाते हुए डिल्डो को चूस कर दिखाया.

मैंने दीदी से कहा- लेकिन दीदी ये डिल्डो तो परमीत के पास वाले डिल्डो से काफी मोटा है और ये ही एक ओर से ही लंड जैसा है. उसका वाला तो दोमुंहा है.
मेरी बातों पर दीदी ने मुस्कुरा कर कहा कि परमीत को मैंने अपना पुराना डिल्डो दिया है, उसे मैंने शुरूआत में लिया था. पर जब उससे खास मजा नहीं आया, तो मुझे बड़ा वाला मंगवाना पड़ा. अब तो ये भी मुझे छोटा लगता है.

मैंने आश्चर्य से कहा- छोटा ? मैं तो ये भी ना ले पाऊं.
दीदी ने कहा- मैं हूँ ना …

उन्होंने बिस्तर पर उल्टे लेटते हुए पोजीशन बदल ली और मुझे पैर सीधा करने को कहा.

वो मेरे ऊपर 69 की पोजीशन में आ गईं. मैं इशारा समझ गई थी, मैंने भी दीदी की गीली चूत मुँह लगा दिया और अपने ही अंदाज में उनकी चूत चाटना शुरू कर दिया. मुझे झांटों की वजह से चूत चाटना कुछ पल अजीब लगा, लेकिन कामुक माहौल में सब कुछ अच्छा

और आनन्ददायक ही होता है.

दीदी ने डिल्डो मुझे थमाया था और चूत के दाने पर रगड़ कर पहले चूत को तैयार करने कहा था. फिर अपना सेक्स कौशल दिखाना ऐसा चैलेंज दिया था.

मेरी चूत ने एक बार रस बहा दिया था, इसलिए दीदी की हरकतें मुझे धीरे-धीरे आगे बढ़ा रही थीं.

मैं दीदी की चूत के ऊपर डिल्डो को रगड़ रही थी और बीच बीच में चूत के अलावा मांसल टांगों कूल्हों को चूमती हुई मन ही मन सोच रही थी कि दोनों डिल्डो का अलग-अलग आनन्द कैसा होगा.

मेरे हाथों में डिल्डो था. उसमें अंडकोश भी बने हुए थे, जो पकड़ने का काम आ रहा था. उसकी मोटाई लगभग तीन इंच से ऊपर ही नजर आ रही थी. लंबाई लगभग दस इंच तो रही थी. ये आदमियों के थोड़े सांवले रंग के लंड जैसे कलर का था, जो परमीत के ट्रांसपेरेंट डिल्डो से काफी अलग था. उसके डिल्डो में दोनों ओर लंड का सुपारे जैसा आकार था लेकिन मोटाई दो इंच के लगभग रही होगी. लंबाई तो एक फुट दिख रही थी.

मेरे मन में भी डिल्डो चूत में लेने का कीड़ा काटने लगा, तो बदन में सिरहन बढ़ने लगी. मेरे हाथों ने डिल्डो को दीदी की चूत में अचानक ही अन्दर तक घुसेड़ दिया और सीधे जड़ तक पेल कर वहीं रोक दिया. शायद दीदी ने ऐसा कभी नहीं किया था, इसलिए वो अति उत्तेजित हो गईं और मेरी चूत को मुँह में भरकर काटने लगीं, जिससे मैं भी तड़प उठी.

दीदी की भीगी चूत में डिल्डो फिसलाना ज्यादा मुश्किल तो नहीं था, पर डिल्डो बहुत ज्यादा मोटा था, इसलिए बहुत आसानी से अन्दर बाहर नहीं हो रहा था.

मैंने डिल्डो यकायक बाहर निकाल लिया, दीदी ने आहहह की आवाज निकाली और मेरी

तरफ देखने लगीं. मैंने दीदी को अपने ऊपर से उठा लिया और बिस्तर के किनारे पर लेटने को कहा.

दीदी ने टांगें हवा में उठा दीं. उनका चुत में डिल्डो लेने का अनुभव उनको सब कुछ सिखा चुका था. दीदी ने अपनी टांगें अपने हाथों से खुद पकड़ रखी थीं और मेरी तरफ देखे जा रही थीं.

मैं उनकी बालों के गुच्छों से भरी चुत देख रही थी.

दीदी मुझसे कहने लगीं- चोद ना साली कुतिया … और कितना तड़पाएगी.
मैंने कहा- पहले चूत में लंड सैट तो कर लूँ.

दीदी की चूत पर बहुत सारा थूक दिया. वो बड़बड़ा रही थीं- आहह … उहहह डाल दे ना अब …
मैंने भी नियमित गति से डिल्डो चूत में उतारना शुरू कर दिया.
दीदी की आंखें बंद थीं और बदन में कंपन होने लगी. दीदी सिसकारियां लेने लगीं- आहहह पूरा पेल दे.
उनकी कंपित ध्वनि के साथ ही लंड रूपी हब्शी डिल्डो महाराज चूत में जड़ तक पेवस्त हो गए.

ये डिल्डो मेरी चूत में घुसे केले से दोगुना मोटा और सख्त था, जिसे पाकर दीदी के अन्दर सुकून और बेचैनी, एक साथ हिलोरें मार रही थी. लेकिन मेरे अन्दर तो बेचैनी ही बेचैनी थी. दीदी के बाद डिल्डो से मेरी चुदाई होनी थी, तो जाहिर है, मैं अपनी बारी का भी इंतजार कर रही थी.

मेरी बारी जल्दी आ जाए, इसी चक्कर में मैंने डिल्डो को बहुत तेजी से अन्दर बाहर करना

शुरू कर दिया. दीदी उस डिल्डो की आदी थीं, इसलिए आसानी से पूरा गटक गईं, पर मेरे असंयमित गति में चोदने से दीदी दर्द और मजे से तड़प उठीं. क्योंकि जब वह स्वयं डिल्डो से चुदाई करती रही होंगी, तब वह चाहकर भी खुद के साथ बेरहम ना हुई होंगी. पर मेरी बेरहमी शायद दीदी को भा गई,.

तभी दीदी मेरे बालों को सहलाते और नोंचते हुए 'आई लव यू गीत … फक मी … फक मी..' बोल कर सिसकने लगी थीं.

इधर मुझे खुद को पता नहीं चला कि मैं भोली भाली गीत, कब इतनी बेरहम बन गई.

दीदी की फूली हुई अनुभवी चूत, जिसमें कुछ हिस्सा बाहर की ओर आ चुका था. उस खुली और फूली चूत में डिल्डो के लगातार और खतरनाक हमले ऐसे लग रहे थे, मानो आज चूत के इस्तेमाल का आखिरी दिन हो. दीदी की मार खाई सांवली चूत भी लाल हो गई थी. इधर मेरी हालत क्या थी, वो तो पूछो ही मत.

तभी मेरी चूत ने मुझे फिर से कहा- अब मुझे भी डिल्डो दे ही दो … तो मैंने अपनी पूरी ताकत लगा कर स्पीड को बढ़ा दिया. पर शायद दीदी को रफ्तार ना काफी लगा … तभी तो दीदी खुद ही डिल्डो की ओर कमर उछालने लगी थीं. ये उपक्रम कुछ ही देर और चला, तभी दीदी बड़बड़ाने लगीं और मैंने उसके शरीर में किसी सर्प की भांति ऐंठन देखकर स्खलन का अंदाजा लगा दिया. साथ ही मैंने अपने बाहुबल का आखिरी छोर तक उपयोग करते हुए डिल्डो से हचक कर चुत चोदने लगी.

तभी दीदी ने मेरा हाथ पकड़ कर रोक दिया. मैंने भी चूत की जड़ तक डिल्डो घुसाये रखा. मैं डिल्डो का बहुत आहिस्ते से परिचालन करने लगी, ताकि दीदी के बदन से अमृत की आखिरी बूंद भी झर जाए. चूत से सफ़ेद रस बाहर आकर उनकी गांड की ओर बहने लगा.

अब दीदी तो निढाल हो चुकी थीं, उन्होंने लेटे हुए ही आंखें बंद कर लीं. उनका शरीर अब फूल की भांति कोमल हल्का हो चुका था. उनकी आक्रमकता, शीतलता में तब्दील हो गई थी.

दीदी की चुदाई के तुरंत बाद मैंने अपनी चुदाई का ख्वाब संजो रखा था, पर दीदी तो शायद नींद के आगोश में चली गई थीं. मैंने सोचा कि चलो बाथरूम से आकर दीदी को उठाऊंगी.

मैं नंगी उठ कर बाथरूम में चली गई, पर जब मैं बाथरूम से लौटी, तो दीदी गहरी नींद में सो चुकी थीं. उन्हें बार-बार हिलाने डुलाने पर भी वो ना उठीं, तो मेरा दिमाग खराब हो गया.

तभी मेरे मन में एक बात आई और मैं खुशी से उछल पड़ी. दरअसल मैं अपने मजे के चक्कर में ये भूल ही गई कि दूसरे कमरे में परमीत और मनु हैं … और जो चीजें हुई थीं, उससे संभवत : उन लोगों के भी जिस्मानी संबंध बन रहे होंगे. मेरी खुशी का कारण यह था कि मैं उन्हें रंगे हाथों पकडूँगी.

यही सोचकर मैं जल्दी से अपने ऊपर एक चादर लपेट लिया और किसी चोर की भांति दबे पाँव उनके कमरे की ओर बढ़ गई.

मैं जब दरवाजे के पास पहुंची, तो मुझे लगा कि दरवाजा अन्दर से बंद नहीं है, तो मैंने दरवाजा धकेल कर देखा. मेरा अंदाजा सही था, दरवाजा तो खुला था ही और अन्दर का नजारा भी मैंने जैसा सोचा था, वैसा ही मिला.

अन्दर वे दोनों अलग तरीके से चुदाई कर रही थीं. लाईट जल रही थी और मेरी दोनों सहेलियों के बदन पर नाममात्र भी कपड़े नहीं थे. मनु नीचे लेटी थी और परमीत उसके ऊपर चढ़ी हुई थी. दोनों ने ही डिल्डो एकसाथ चूत में डाल रखा था. आधा लंड परमीत की

चूत में था और आधा मनु की चूत में घुसा था.

आहहह नजारा देखते ही मैं होश गंवाने लगी. उन्हें कामक्रीड़ा में मग्न देखकर लग रहा था कि इन्हें दीन-दुनिया की कोई खबर ही नहीं होगी.

यही सोचकर मैंने दबे पाँव पास जाकर उन्हें चौंकाना चाहा, पर मेरे नजदीक पहुंचने से पहले ही परमीत ने कहा- आजा कुतिया … तेरी ही कमी थी, हम तो तेरा कबसे इंतजार कर रहे थे, पर तू तो साली दीदी के अनुभव का आनन्द ले रही थी.

मैंने कहा- फालतू कुछ भी मत बोलो.
तो उसने कहा- चल बे हरामन तू ज्यादा बन मत … हम लोगों ने तुझे मजे करते देखा है, तुम्हारे कमरे की भी कुंडी नहीं लगी थी.

मैं एक बार को चौंक गई. पर मुझे जहां तक याद था कि मैंने कुंडी खुद बंद की थी. मैं अपना सर खुजा ही रही थी कि पीछे से कंधे पर एक हाथ पड़ा.

ये दीदी का हाथ था. उन्होंने कहा- अब दिमाग पर ज्यादा जोर मत दो … आज दिन में हम दोनों बहनों ने बहुत ऐश की थी … और उसी समय से तुम दोनों को भी किसी दिन चोदने की प्लानिंग हो गई थी. पर रब की मेहरबानी देखो, उसने आज ही मौका दे दिया. चल अब समय ना गवां.

ये कहते हुए दीदी ने मेरे बदन से चादर हटा दिया.

अब हम चारों ही परमीत के बिस्तर पर आ गए. बिस्तर चार लोगों के फैल कर सोने के लायक तो नहीं थी, पर मस्ती और चुदाई के लिए ये काफी था.

मैं परमीत के बदन से लिपटने लगी … और दीदी ने मनु को निशाना बनाया. दीदी और मनु

एक जैसी ही कद काठी और शारीरिक संरचना के लग रहे थे. बस फर्क ये था कि मनु उम्र में कम होने की वजह से ज्यादा कसी हुई थी और चूत का मुँह खुला नहीं था … पर गदराये बदन की वजह से फूली हुई जरूर थी. मनु की चुत चिकनी भी थी, शायद आज-कल में ही झांटों को साफ़ किया गया था.

मैंने परमीत से लिपटे हुए भी मनु के शरीर को कई बार सहला लिया. मुझे परमीत की उत्तेजना का सीधा अहसास हो रहा था, उसके बदन का अहसास लाजवाब था. सच कहूं, तो दीदी से भी ज्यादा कामुक और आकर्षक, उठे हुए उरोज, सपाट पेट, भारी नितम्ब खूबसूरत गर्दन, लचकती कमर इन सबको आज तक सिर्फ देखा था और छुआ भी था, तो कपड़ों की आड़ में. पर आज सब कुछ मेरे लिए था, बेपर्दा था, बेइंतिहां था और मैं इसी अहसास से ही मदहोश होने लगी.

परमीत ने मेरे सर को पकड़ कर मेरे मुँह में अपनी जीभ को डाल दिया और हम चूमाचाटी के चरम सुख को पाने का प्रयास करने लगे.

कहानी जारी रहेगी.
मुझे उम्मीद है कि आपको लेस्बियन सेक्स की यह कहानी पढ़ कर मजा आया होगा.
ssahu9056@gmail.com

Other stories you may be interested in

गीत मेरे होंठों पर-2

अंजू ने बिंदास जवाब दिया- यार, आराम से तो पति भी चोदता है, थोड़ा रगड़ के अंदर तक चुदाई हो, और थ्री सम या ग्रुप भी हो जाये तो मजा आ जायेगा। मैं चाहती हूँ कि मर्द मुझे बड़े-बड़े लंडों […]
Full Story >>>

दोस्त की गर्लफ्रेंड को पटा कर चुदाई

हैलो फ्रेंड्स, मेरा नाम जीत है, मैं दिल्ली से हूँ. मैं अन्तर्वासना का पुराना पाठक हूं. यहां पर मैंने कॉलेज के समय से ही काफी कहानियां पढी हैं. आज मैं अपने कॉलेज के समय की कहानी सुनाता हूँ। पहले अपने […]
Full Story >>>

खूबसूरत किरायेदार भाभी को पटा कर चोदा

दोस्तो, मेरा नाम विन चौधरी है. मैं हरियाणा का रहने वाला हूँ. मैं अन्तर्वासना का पिछले दस सालों से नियमित पाठक हूँ. मैंने यहां पर बहुत सी सेक्स कहानियां पढ़ी हैं पर सबसे ज़्यादा मुझे देवर भाभी की सेक्स कहानियां […]
Full Story >>>

बहू के साथ शारीरिक सम्बन्ध-5

थोड़ी देर तक बहू ऐसे ही करती रही और फिर एक बार सीधी बैठी और इस बार अपनी साड़ी को अपने से अलग किया तो मुझे उसका मैचिंग पेटीकोट नजर आया। सायरा अब और नीचे मेरी जांघ की तरफ आ […]
Full Story >>>

छोटी सी लड़की लण्ड ले बड़े बड़े

मेरा नाम जॉर्डन चौधरी है उम्र 28 साल है एक केमिकल कंपनी में जॉब करता हूं। अन्तर्वासना का नियमित पाठक और लेखक रहा हूँ। मेरी देसी बॉडी है और लण्ड का साइज 7 इंच है। बहुत सी कहानियां जो मेरे […]
Full Story >>>